

ईश्वर ने सम्पूर्ण जगत के प्राणियों को अनेक अमूल्य उपहार दिए हैं जिनमें से पेड़-पौधे मुख्य हैं। सचमुच, ये हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। इनका हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। पेड़ दुर्गन्ध लेते हैं और सुगन्ध लौटाते हैं अर्थात् ये कार्बन डाईऑक्साइड ग्रहण करके हमें ऑक्सीजन देते हैं। ये सूर्य की गर्मी को स्वयं सहन करके हमें छाया प्रदान करते हैं, इसलिए ये परोपकारी हैं। इनसे हमें फल और फूल, ईंधन, गोंद, रबड़, फर्नीचर की लकड़ी, कागज आदि मिलते हैं। पेड़-पौधों से वातावरण शुद्ध बनता है तथा भूमि की उर्वरता बढ़ती है क्योंकि इनकी पत्तियाँ खाद बनाने के काम आती हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी इनकी अहम भूमिका है। पेड़ों के पत्तों, जड़ों, फलों, फूलों तथा छाल आदि से कई प्रकार की दवाइयाँ बनती हैं। धार्मिक दृष्टि से तो पेड़ों का बहुत महत्त्व है। ऐसे भी कई पेड़ पौधे हैं जिन्हें पूजा जाता है जैसे-तुलसी, पीपल, केला, बरगद, आम आदि। पेड़ों का सम्बन्ध रोजगार से भी जुड़ा है। पेड़ों से लोग टोकरियाँ, बैग, चटाइयाँ, पेंसिलें, फर्नीचर आदि बनाकर अपना रोजगार करते हैं। अतः पेड़-पौधों का इतना महत्त्व होने पर इनका संरक्षण करना चाहिए। ये हमें लाभ ही देंगे। कहा भी है-पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ।

अपने नये घर में प्रवेश

हम कुछ समय पहले किराए के मकान में रह रहे थे, किन्तु मेरे पिता जी ने एक प्लॉट खरीद लिया था। हम वहाँ पिछले डेढ़ साल से नया घर बनवाने में जुटे थे। पिछले सप्ताह नया घर बनकर तैयार हो गया था। नए घर के अनुरूप नए पर्दे, नया फर्नीचर खरीदना स्वाभाविक ही था। मेरे पिता जी ने मेरे और मेरी बहन के लिए पढ़ाई करने का एक कमरा अलग से बनवाया था। उन्होंने हमारे पढ़ने वाले कमरे के लिए स्टूडी टेबल, कुर्सियाँ और दो छोटी-छोटी अलमारियाँ बनवायी थीं। उस घर में प्रवेश करने के लिए घर का प्रत्येक सदस्य उत्सुक था। नए स्टूडी रूम की बात सोचकर तो मैं रोमाँचकारी हो जाता था। रविवार को गृह-प्रवेश था। हमने अपने सभी रिश्तेदारों, मित्रों को गृह-प्रवेश के अवसर पर सादर आमंत्रित किया था। इस अवसर पर पूजा का विधान होता है अतः ठीक आठ बजे पूजा शुरू हो गयी। पूजा में सभी शामिल हुए। पिता जी ने पूजा के बाद दोपहर के भोजन का बढ़िया प्रबन्ध किया हुआ था। सभी ने भोजन किया और हमें नए घर में प्रवेश पर बहुत-बहुत बधाइयाँ दीं। हमने सभी का धन्यवाद किया। सचमुच, नए घर में प्रवेश करके सारे परिवार की खुशी का ठिकाना न था।